क्या क़व्वाली सुनना जाइज़ है ?

इस्लामी भाईयों! आज कल बुजरुगाने दीन के मज़ारात पर उनके उर्सों का नाम लेकर खूब मौज मस्तियां हो रही हैं और अपनी रंग रंगेलियों, बाजों, तमाशों, औरतों की छेड़ छाड़ के मज़े उठाने के लिए अल्लाह वालों के मजारों को इस्तेमाल किया जा रहा है और ऐसे लोगों को न खुदा का खौफ है, न मौत की फिक्र और न जहन्नम का डर।

आज कल कुफ्फार व मुशरिकीन यह कहने लगे हैं, कि इस्लाम भी दूसरे मज़हबों की तरह नाच, गानों तमाशों, बाजों और बेपर्दा औरतों को स्टेजों पर लाकर बे हयाई का मुज़ाहिरा करने वाला मजहब है लिहाज़ा अहले कुफ्र के इस्लाम कबूल करने की जो र्फतार थी। उसमें बहुत बड़ी कमी आ गई है।

मज़हबे इस्लाम में बतौर लहव व लअब (खेल कूद) ढोल, बाजे और मज़ामीर (म्यूज़िक) हमेशा से हराम रहे हैं। बुखारी शरीफ की हदीस है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायाः

'' जरूर मेरी उम्मत में ऐसे लोग होने वाले है जो ज़िना, रेशमी कपड़ो, शराब और बाजों ताशों को हलाल ठहरायेंगे।''

(सही बुखारी, जिल्द 2, किताबुल अशरिबह, सफहा 837) दूसरी हदीस में हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ियामत की निशानियां बयान करते हुए फरमायाः—कियामत के क़रीब नाचने गाने वालियों और बाजे ताशों की कसरत हो जाएगी।'' (तिर्मिजी, मिश्कात, बाबे अशरातुस्साअह, सफहा 470) फतावा आलमगीरी जो अब से साढ़े तीन सौ साल पहले बादशाहे हिन्दुस्तान मुहीय्युद्दीन औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाहि तआला हलैह के हुक्म से उस दौर के तकरीबन सभी मुसतनद व मोतबर उलमाए किराम ने जमा होकर मुरत्तब फरमाई जो अरबी जबान (भा ा)में तकरीबन तीन हजार सफहात और छह जिल्दों पर फैला हुआ एक अजीम इस्लामी इन्साइक्लोपीडिया है। उस में लिखा है।

'' सिमाअ, कव्वाली और रक्स (नाच कूद) जो आज कल के नाम निहाद सूफियों में राइज है यह हराम है इस में शिरकत जाइज नही।'' (फतावा आलमगीरी,जिन्द 5, किताबुल कराहियहत, बाब 17, सफहा 352) आलाहजरत मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खॉ साहब रदियल्लाहु तआला अन्हु का फतवा अरब व अजम में माना जा रहा है उन्होंने मज़ामीर (म्यूज़िक)के साथ क़व्वालियों को अपनी किताबों में कई जगह हराम लिखा है।

कुछ लोग कहते हैं मजामीर(म्यूज़िक़) के साथ कव्वाली चिश्तिया सिलसिले मं राइज ओर जाइज़ है। यह बुजरुगाने चिश्तिया पर उनका खुला बोहतान है बल्कि उन बुजुर्गो ने भी मज़ामीर के साथ कव्वाली सुनने को हराम फरमाया है। सय्यिदना महबूबे इलाही निजामुद्दीन देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने खास खलीफा सय्यिदना फखरूद्दीन ज़रदारी से मसअलए क़व्वाली के मुतअल्लिक एक रिसाला लिखवाया जिसका नाम – कश्फुल किनाअ, अन उसूलिस्सिमाअ' है। इसमें साफ लिखा हैः हमारे बुजुर्गो का सिमाअ इस मज़ामीर के बोहतान से बरी है (उनका सिमाअ तो यह है) सिर्फ क़व्वाल की आवाज अशआर के साथ हो जो कमाल सनअते इलाही की खबर देते हैं।कुतबुल अकताब सय्यिदना फरीदुद्दीन गंज शकर रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद ओर सय्यिदना महबूबे इलाही निजामुद्दीन देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के खलीफा सयि्यदना मुहम्मद बिन मुबारक अलवी किरमानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मशहूर किताब सैरूल औलिया में तहरीर फरमाते हैंः

'' महबूबे इलाही ख्वाजा निजामुद्दीन देहलवी अलैहिर्रहमतु वर्रिदवान ने फरमाया कि चन्द शराइत के साथ सिमाअ हलाल हैः

01. सुनाने वाला मर्दे कामिल हो छोटा लड़का और औरत न हो।
02. सुनने वाला यादे खुदा से गाफिल न हो।
03. जो कलाम पढ़ा जाए, फहश, बेहयाई और मसखरगी न हो।
04. आलए सिमाअ यानी सारंगी मज़ामीर(म्यूज़िक़) व रूबाब से पाक हो ।

(सैरूल औलिया, बाब 6, दर सिमाअ, वज्द व रक्स, सफहा 501) पर है कि एक शख्स ने हजरते महबूबे इलाही ख्वाजा निजामुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह से अर्ज किया कि इन अय्याम में बाज आस्तानाए दार दुरवेशों ने ऐसे मजमें में जहां चंग व रूबाब मजामीर था, रक्स किया तो हजरत ने फरमाया कि उन्होंने अच्छा काम नही किया जो चीज शरअ में नाजाइज़ है वह नापसन्दीदा है। उसके बाद किसी ने बताया कि जब यह जमाअत बाहर से आई तो लोगों ने उन से पूछा कि तुम ने यह क्या किया वहॉ तो मजामीर थे तुम ने सिमाअ किस तरह सुना और रक्स किया? उन्होंने कहा हम इस तरह सिमाअ में डूबे हुए थे कि हमें यह मालूम ही नही हुआ कि यहॉ मजामीर है या नही। हजरत सुल्तानुल मशाइख ने फरमाया यह कोई जवाब नही इस तरह तो हर गुनाहगार हरामकार कह सकता है।

यानी कि आदमी जिना करेगा और कह देगा कि मै बेहोश था मुझको पता नही कि मेरी बीवी है या गैर औरत, शराबी कहेगा कि मुझे होश नही कि शराब पी या शरबत।

इसके अलावा उन्हीं हजरते सयि्यदना महबूबे इलाही निजामुद्दीन हक वालिदैन अलैहिर्रहमतु वार्रिदवान के मलफूजात पर मुशतमिल उन्ही के मुरीद व खलीफा हजरत ख्वाजा अमीर हसन अलाई सन्जरी की तसनीफ फवाइदुल फवाएद शरीफ में हैं।

हजरते महबूबे इलाही की खिदमत में एक शख्स आया और बताया कि फलां जगह आपके मुरीदों ने महफिल की है और वहां मजामीर भी थे। हज़रत महबूबे इलाही ने इस बात को पसन्द नही फरमाया। और फरमाया कि मैंने मना किया है मज़ामीर (बाजे) हराम चीजें वहां नही होना चाहिए इन लोगों ने जो कुछ किया अच्छा नही किया इस बारे में काफी जिक्र फरमातें रहें। इसके बाद हज़रत ने फरमाया कि अगर कोई किसी मुक़ाम से गिरे तो शरअ में गिरेगा और अगर कोई शरअ से गिरा तो कहॉ गिरेगा। (फवाइदुल फवाएद, जिल्द 3, मजलिस पन्जुम, सफहा, 512 मतबूआ उर्दू अकादमी, देहलवी तर्जमा, ख्वाजा हसन निजामी)

मुसलमानो! जरा सोचो यह हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन देहलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु का फतवा है जो तुमने ऊपर पढ़ा। इन अकवाल के होते हुए क्या कोई हक सकता है। खानदाने चिश्तिया में मज़ामीर के साथ क़व्वाली जाइज है? हां यह बात वही लोग कहेंगे जो चिश्ती है, न क़ादरी उन्हें तो मज़ेदारियां और लुत्फ अन्दोजियां चाहिए।

और अब जबकि इस ज़माने में सारे के सारे क़व्वाल बे नमाज़ी और फासिक़ व फाज़िर है।

(पूरे लोग नही तो अकसरिय्यत फासिक़ व फाजिर हैं)यानी गुनहगार हैं। यहां तक कि बाज शराबी तक सुनने में आए हैं। यहां तक कि औरतों और अमरद लड़के भी चल पड़े हैं। ऐसे माहौल में इन क़व्वालियों को सिर्फ वही जाइज़ कहेगा जिसको इस्लाम व कुर्आन, दीन व ईमान से कोई मुहब्बत न हो और हरामकारी, बेहायाई, बदकारी उसके रग व पय में सरायत कर गई हो। और कुर्आन व हदीस के फरामीन की उसे कोई परवाह न हो। क्या इसी का नाम इस्लाम है कि मुसलमान औरतों को लाखों के मजमें में लाकर उनके गाने बजाने कराये जायें फिर उन तमाशों का नाम बुजुर्गो का उर्स रखा जाए। काफिरो के सामने मुसलमानों और मज़हबे इस्लाम को ज़लील व बदनाम किया जाए? कुछ लोग कहते हैं कि कव्वाली अहल के लिए जाइज़ और नाअहल के लिए नाजाइज़ है। ऐसा कहने वालों से हम पूछते हैं कि आजकल जो कव्वालियों की मजलिसों में जो लाखों लाख के मजमें होते है क्या यह सब अल्लाह वाले और असहावे इसतेग़राक़ है? जिन्हें दुनिया व मताए दुनिया का कतअन होश नहीं? जिन्हें यादे खुदा और जिक्रे इलाही से एक आन की फुरसत नही?

खर्राटे की नीदों और गप्पों, शप्पों में नमाज़ों को गंवा देने वाले, रात दिन नंगी फिल्मों, गन्दे गानों में मस्त रहने वाले , मां बाप की नाफरमानी करने और उनको सताने वाले, चोर चकोर, झूटे फरेबी, गिरह काट, वगैरा कया सब के सब थोड़ी देर के लिए कव्वालियों की मजलिस में शरीक हो कर अल्लाह वाले हो जाते है?और उसकी याद में महव हो जाते है? या पीर साहब ने अहल का बहाना तलाश करके अपनी मौज मस्तियों का सामान कर रखा है? कि पीरी भी हाथ से न जाए और दुनिया की मोज मस्तियों में भी कोई कमी न आए। याद रखो कब्र की अंधेरी कोठरी में कोई हीला व बहाना न चलेगा।

कुछ लोगों को यह कहते सुना गया है मज़ामीर के साथ कव्वाली नाजाइज़ होती तो दरगाहों और खानकाहों में क्यू होती?

काश यह लोग जानते कि रसूले पाक की हदीसों और बुजुर्गाने दीन के मुकाबले में आजकल के फासिक दाढ़ी मुन्डाने वाले नमाजों को कसदन छोड़ने वाले बाज खानकाहियों का अमल पेश करना दीन से दूरी और सख्त नादानी है जो हदीसें हमने ऊपर लिखीं और बुजुर्गाने दीन के अक़वाल नक़ल किये गए उनके मुकाबिल न किसी का कौल मोअतबर होगा न अमल। आजकल खानकाहों में किसी काम का होना उसके जाइज़ होने की शरई दलील नही है।

बाज खानकाहों की ज़बानी यह भी सुना कि हम कव्वालियां इसलिए कराते है कि ज़्यादा लोग जमा हो जायें और उर्स भारी हो जाए। यह भी सख्त नादानी है गोया आपको अपनी नामवरी की फिक्र है आखिरत की फिक्र नही। आपको कोई जानता न हो, आपके पास कोई बैठता न हो, आप गुमनाम हों और हरामकारियों से बचते हों।

नमाजों के पाबन्द हों, बीवी बच्चों के लिए हलाल रोजी कमाने में लगे हों और आपका परवरदिगार आप से राजी हो यह हजार दर्जे बेहतर है इससे कि आप मशहूरे ज़माना शख्सियत हों। आपके हज़ारो मुरीद हों, हर वक्त हजारों मोअतक़िदीन का झमघटा लगा रहता हो या लाखों मजमें में बोलने वाले ख़तीब और मुकर्रिर हों। बड़े अल्लामा व मौलाना शुमार किये जाते हों लेकिन हरामकारियों में इनहिमाक, नमाजों से ग़फलत, शोहरत व जाह तलबी, दौलत की नाजाइज़ हवस की वजह से मैदाने महशर में खुदाए तआला के सामने शर्मिन्दगी हो। कियामत के दिन खिफ़्फ़त उठानी पड़े। बिलअयाज़ु बिल्लाहि तआला कही जहन्नम का रास्ता न देखना पड़े।

मेरे भाईयों! दिल में यह तमन्ना रखें यही खुदाए क़दीर से दुआ किया करो कि ख्वाह हम मशहूरे ज़माना पीर और दिलों में जगह बनाने वाले ख्वाह हों या न हों लेकिन हमारा रब हम से राज़ी हो जाए ईमान पे मौत हो जाए और जन्नत नसीब हो जाए। और खुदाए तआला हमें चाहे थोड़ों में रखे लेकिन अच्छों और सच्चों में रखें। फक़ीरी और दुरवेशी भीड़ और मजमा जुटाने का नाम नही हैं। फक़ीर तो तन्हाई पसन्द होते है और भीड़ से भागते हैं अकेले में यादे खुदा करते हैं।

उनकी याद उनका तसव्वुर है उन्हीं की बाते
कितना आबाद मेरा गोशए तन्हाई है

आख़िर में एक बात यह भी बता देना ज़रूरी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि '' जो कोई खिलाफे शरअ काम की बुनियाद डालते हैं तो उस पर अपना और सारे करने वालों का गुनाह होता है।'' लिहाज़ा जो मज़ामीर के साथ कव्वालियां कराते हैं और दूसरों को भी इसका मौक़ा देते हैं उन पर अपना, क़व्वालों पर लाखों तमाशाइयों का गुंनाह है और मरते ही उन्हें अपनी करतूतों का अन्जाम देखने को मिल जाएगा।

हमारी इस तहरीर को पढ़ कर हमारे इस्लामी भाई बुरा न मानें बल्कि ठण्डे दिल से सोंचे अपनी और अपने भाईयों की इस्लाह की कोशिश करें।

अल्लाह तआला प्यारे मुस्तफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्तम के सदक़े व तुफैल तौफीक़ बख़्शें।

मोहतरम उलमाए अहले सुन्नत से सवाल •

आप कैसे नाइबे रसूल और वारिसे रसूल हैं। कि चंद सर करदह हस्तियों की ताइद व हिमायत से घबराकर बातिल के खिलाफ हक़ की आवाज़ बुलन्द करने से गुरेज़ कर रहे हैं। अपनी ज़िम्मेदारियों के लिए सिर्फ आप ही जवाब दह होंगे। मैदाने महशर में जब हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी नियाबत व वरासत का हक़ अदा न कर ने पर सवाल करैंगे। और अल्लाह तबारक तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हुक्मे उदुव्वली का हिसाब लेगा तो आप किया जवाब देंगे ?

मसअलों से मोड़ कर मुंह कब तलक बैठोगे तुम।
कोई भी तूफां तुम्हें घर से उठा ले जाएगा।।

बरैली शरीफ, मारहरा शरीफ, बेलगिराम शरीफ, मुबारक पूर, इन सब जगहो पर आज भी क़व्वाली नही होती है। यह सब जगहें इल्म का मरकज़ हैं।